दो०—नाम पुस्तकों का तथा मिलने का स्थान ।
पर उनमें गुण दोष जो करते वे न बखान ॥२८४
कवि द्वारा गलतियों का जाता दिया प्रकाश ।
लौटा दें तुक बन्दियां उसकी उस के पास ॥२८५
केला में बनना उचित स्वांति बूंद काफूर ।
केला में है ही न जब केला का दस्तूर ॥२८६
काव्य परखना प्रथम तो कवियों से कर प्राप्त ।
पुनः द्विवेदी पथ गहें कर निज पक्ष समाप्त ॥२८७
सरस्वती करती सदा कविता का सब काम ।
लज्जा लगती लोग जब लेते मेरा नाम ॥२८८
सन्तति-क्रम दे सुकवि को, प्रकृति नियम अभिराम ।
देती तो शुभ दे, करे नाम न जो बदनाम ॥२८९
पढ़ ली पुस्तक पाठकों जो कि सहित अनुराग ।
गुण सादर चुन लीजिये दोष दीजिये त्याग ॥२९१
कवियों का पहले करो तुकियों शुभ सत संग ।
वहीं मिलेंगे काव्य के सारे उत्तम अंग ॥२९२
कवि संगति ही से मुझे हुआ ज्ञान यह प्राप्त ।
है प्रमाण, जो कुछ पढ़ी ऊपर कथा समाप्त ॥२९३